

महन्त अवेद्यनाथ

महन्त अवेद्यनाथ का जन्म ग्राम कांडी, जिला गढ़वाल, उत्तराखण्ड में 18 मई, 1919 को हुआ था। उनके बचपन का नाम कृपाल सिंह था। वे बाल्यावस्था में ही अनाथ हो गए। बचपन से ही बालक कृपाल सिंह सांसारिक राग-द्वेष से विमुख होकर मोक्ष की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो गए। थोड़ा बड़े हो जाने पर, कृपाल सिंह गृह त्यागकर ऋषिकेश एवं हरिद्वार में संतों के सान्निध्य में चले गए।

नाथपंथ के संत योगी निवृत्तिनाथ के सान्निध्य में आने के बाद उनका झुकाव नाथपंथ (सम्प्रदाय) की ओर हुआ तथा यह झुकाव नाथपंथ के परमाचार्य, दर्शनशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान एवं स्वतंत्रता सेनानी योगी शांतिनाथ जी से मिलने के बाद और भी प्रगाढ़ हो गया।

सन 1940 में कृपाल सिंह योगी निवृत्तिनाथ के साथ गोरखपुर स्थित गोरखनाथ मंदिर गए। उस समय, तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त जी दिग्विजयनाथ जी महाराज को एक सदशिष्य की तलाश थी। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त जी महाराज ने बालक कृपाल सिंह में वे गुण देख लिए थे जो एक शिष्य में होने चाहिए तथा उन्होंने योगी शांतिनाथ से कृपाल सिंह को अपना शिष्य बनाने की इच्छा प्रकट की। योगी शांतिनाथ जी के निर्देश एवं गोरक्षपीठाधीश्वर के कार्यकलापों से प्रभावित होकर बालक कृपाल सिंह ने महंत जी महाराज का 8 फरवरी, 1942 को शिष्य बनने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। गोरक्षपीठाधीश्वर महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज ने कृपाल सिंह को 'अवेद्यनाथ' नाम दिया तथा उन्हें औपचारिक रूप से अपना शिष्य तथा नाथ पंथ का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। ऋषिकेश, हरिद्वार तथा वाराणसी से 'शास्त्री', 'विद्या वारिधि' और 'विद्या विशारद' की उपाधि से विभूषित महंत जी महाराज वेदान्त-दर्शन एवं योग-दर्शन के असाधारण तत्त्वज्ञानी थे। भगवद्गीता के मर्मज्ञ होने के साथ ही वे परोपकार, सामाजिक समरसता एवं अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए भी जाने जाते थे।

महन्त अवेद्यनाथ के मार्गदर्शन में गोरखनाथ मंदिर ने शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में अनुकरणीय प्रतिमान स्थापित किए।

महन्त अवेद्यनाथ जी के हृदय में हिन्दू धर्म के सभी समुदायों, सम्प्रदायों एवं उप सम्प्रदायों के प्रति अपार सम्मान था। इस बात का स्पष्ट प्रमाण महन्त जी के कार्यकाल में मंदिर परिसर में स्थापित हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों और उप संप्रदायों के महापुरुषों, गुरुओं, वीरसपूतों की प्रतिमाओं से मिलता है। महन्त अवेद्यनाथ ने धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। वेदान्त एवं योग के दार्शनिक के रूप में उनके उदार एवं शिष्ट दृष्टिकोण की समाज के सभी वर्ग के लोगों द्वारा प्रशंसा की जाती थी।

महन्त अवेद्यनाथ अपनी दूरदृष्टि, संगठनात्मक दक्षता तथा सबसे बढ़कर दलितों तथा सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान के प्रति अपनी निष्ठा के लिए जाने जाते थे और सम्मानित किए जाते थे।

महन्त अवेद्यनाथ पांच बार उत्तर प्रदेश विधान सभा सदस्य के रूप में तथा चार बार संसद सदस्य के रूप में चुने गए थे।

वे 'अखिल भारत वर्षीय अवधूत भेष वारह पंथ योगी महासभा' (हरिद्वार) के 1969 से 2014 तक अध्यक्ष रहे तथा वे वर्ष 1971, 1989, 1991 तथा 1996 में भारत सरकार के गृह मंत्रालय की सलाहकार समिति के सदस्य भी रहे। इन्होंने 'अखिल भारत हिन्दू महासभा' के उपाध्यक्ष तथा महासचिव के पदों को भी सुशोभित किया।

महन्त अवेद्यनाथ का लम्बी बीमारी के बाद 12 सितम्बर, 2014 को निधन हो गया।

डाक विभाग महन्त अवेद्यनाथ की स्मृति में स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक-टिकट /	:	विनिता सिन्हा
प्रथम दिवस आवरण	:	
विरूपण	:	अलका शर्मा



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	:	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	:	5.20 लाख 0.52 Million
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	:	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

* 20,000 प्रस्तावक हेतु

* 20,000 for the Proponent

मूल्य ₹ 5.00

Mahant Avaidyanath

Mahant Avaidyanath was born on 18th May, 1919 in village Kandi, district Garhwal, Uttaranchal. His childhood name was Kripal Singh. He lost his parents at an early age. Even as a child Kripal Singh was drawn towards achieving salvation from this world. When he was slightly older, Kripal Singh left his house and sought and got patronage of saints in Rishikesh and Haridwar.

His inclination towards Nathpanth (cult) came after his association with Yogi Nirvritinath- a saint of Nathpanth, and it continued to grow after meeting yogi Shantinath- a great teacher of Nathpanth who was an erudite philosopher & freedom fighter.

Kripal Singh visited the Gorakhnath temple in Gorakhpur with yogi Nirvritinath in the year 1940. At the time, the then Gorakshpeethadheeshwar Mahant Digvijaynath Ji Maharaj was looking for a suitable disciple. Gorakshpeethadheeshwar Mahant Ji Maharaj found the qualities he was looking for in a disciple, in the child Kripal Singh and expressed a desire to make Kripal Singh his disciple to Yogi Shantinath. Inspired by the instructions of Yogi Shantinath, and the activities of Gorakshpeethadhisawar, Kripal Singh accepted the offer to be a disciple of Mahant Ji Maharaj on 8th Feb, 1942. Gorakshpeethadheeswar Mahant Digvijaynath Ji Maharaj gave Kripal Singh the name 'Avaidyanath' and formally declared him as his disciple and the successor of Nathpanth. Conferred with the degrees of 'Shastri', 'Vidya Varidhi' and 'Vidya Visharad' from Rishikesh, Haridwar and Varanasi, Mahant Ji Maharaj was a great learner of Vedant Philosophy & Yoga Philosophy. Apart from being an expert on the Bhagwadgeeta, he was a known for his selflessness, social harmony & his work for eradication of untouchability.

Under the leadership of Mahant Avaidyanath the Gorakhnath temple, established itself as an ideal of exemplary norms in the fields of education, health and

social welfare.

Mahant Avaidyanath had a lot of respect for all communities, sects and sub-sects of Hindu religion. This was evident from the temple premises where he established statues of different legends, gurus and martyrs concerned with different sects and sub-sects of Hindu religion during the time. Mahant Avaidyanath made his mark in religious, political, social, spiritual and cultural fields. A philosopher of Vedanta and Yoga his generous and courteous attitude was greatly admired by all.

Mahant Avaidyanath was known and respected for his foresight, organizational capability and above all his passion towards the salvation of downtrodden and socially backward people.

Mahant Avaidyanath was elected as Member of UP Legislative Assembly on five occasions and was elected as Member of Parliament on four occasions.

He was the President of the 'Akhil Bharatvarshiya Avdhoot Bhash Bahah Panth Yogi Mahasabha' (Haridwar) from 1969 to 2014 and was the Member of the Advisory Committee of the Ministry of Home affairs, Government of India in the years 1971, 1989, 1991 and 1996. He also held the post of Vice-President and General Secretary of 'Akhil Bharat Hindu Mahasabha'.

Mahant Avaidyanath-left for his heavenly abode, following a prolonged illness, on 12th September 2014.

The Department of Posts honours the memory of Mahant Avaidyanath through issue of this commemorative postage stamp

Credits:-

Text : Based on the material provided by the proponent.
Stamp/FDC : Vinita Sinha
Cancellation : Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग Department of Posts India



महन्त अवेद्यनाथ
MAHANT AVAIDYANATH

विवरणिका
BROCHURE